ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-1 * Issue-11*April-2015

अक्षर–ब्रह्म का संस्कृत वाङ्मय में वैज्ञानिक प्रयोग

श्री प्रकाश सिंह
विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग,
सुरज सिंह मेमोरियल कॉलेज
रांची विश्वविद्यालय, रांची

सारांश

नाद, अक्षर या वर्ण की व्याकरणिक व्याख्या उपलब्ध है, तथापि संस्कृत वाऽमय में इसके अन्य चमत्कारिक शक्ति का संधान भी प्राप्त होता है। वर्ण या नाद को "अक्षर ब्रह्म" भी कहा गया है। जो नित्य है। जो कभी क्षय नहीं होता अतः "ब्रह्म" है। देवप्रदत्त शक्तियां अनित्य नहीं हो सकतीं। भारतीय दर्शन ब्रह्म के नित्यत्व को स्थापित करता हुआ ही दीख पड़ती है– 'ब्रह्म नित्यं जगन्मिथ्या'।

माहेश्वर प्रदत्त "वर्ण समाम्नाथ", अक्षर–ब्रह्म, नाद, मंत्र सभी समानार्थी एवं चमत्कारि फल प्रदातृ हैं, साथ ही पूर्ण ब्रह्म का द्योतक भी जो मानव जीवन के विभिन्न ज्ञान–विज्ञान की गर्भा है।

मुख्य शब्द : "अक्षर ब्रह्म"

प्रस्तावना

देववाणि संस्कृत की लिपी, जिसे देवनागरी के नाम से जाना जाता है–को वर्णमाला को 'माहे"वर सूत्र' कहा गया है। इसकी पुष्टि के लिए नन्दिकेश्वर कारिकाओं में कहा गया है–

'नृतावसाने नटराराजो नानाद ढक्कां नवपंचवारम्।
उत्तर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विम"ा f"ावसूत्रजालम्।।'

इस प्रसंग का कथवृत है कि सनक सनन्दन आदि सप्तऋषि अपने अभिष्ट सिद्धि हेतू महादेव माहेश्वर की उपासना कर रहे थे। पाणिनि सेवक भाव में सप्तऋषियों के साथ थे। सप्तऋषियों की उपासना से प्रसन्न होकर महादेव ने सप्तऋषियों के अभिष्ट प्राप्ति के लिए सात वार एवं आर्"िावादात्मक सात वार कुल चौदह बार अपना डमरू बजाया, जिससे सप्तऋषियों की तपस्या पर्ण हुई। उनकी सेवा में रत महर्षि पाणिनी ने उन चौदह डमरू ध्वनि (नाद) का संचय में कर 3978 सूत्रों का निर्माण कर, आठ अध्यायों वाली ''अष्टाध्यायी'' नामक देववाणि का व्याकरण ग्रन्थ का निर्माण कर दिया। जो आज भी इतना वैज्ञानिक और समृद्ध है, जिसको तुलना विश्व की किसी भाषा के व्याकरण से भी नहीं की जा सकती है–विश्वख्यात् भाषा आंग्लभाषा (अंग्रेजी) के व्याकरण से नहीं की जा सकती है–विश्वख्यात् भाषा आंग्लभाषा (अंग्रेजी) के व्याकरण नेसफिल्ड तो वालकृति ही प्रतीत होने लगती है। पाणिनि शिक्षा में भी कहा गया है –

येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः।।

अर्थात् जिसने महेश्वर से अक्षर समाम्नाय प्राप्तकर सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र का प्रवचन किया है, उस पाणिनि को नमस्कार है।

महादेव शिव द्वारा प्राप्त अक्षर समाम्नाय हैं – 'चौदह माहेश्वर सूत्र'

1. अइउण्	4. ऐऔच्	7. ञमङणनम्	10. जबगडद"ा्	13. शषसर्
2. ऋलृक्	5. हयवरट्	8. झमञ्	11. खफछठथचटवत्	14. हल्
3. एओङ	6. लण्	9. घढघष्	12. कपय्	

जिस पर पाणिनि ने सूत्र रूप में (3978 सूत्र) एवं आठ अध्यायों में व्याकरण ग्रन्थ की रचना की जिसे 'अष्टध्यायी' कहा गया है। कालान्तर में वरदराज प्रभृति कई वैयाकरणों ने वृति–टीका आदि इसपर लिखी जिसमें सिद्धान्त कौमुद्री, लघु सिद्धान्त कौमुदी, मध्यसिद्धान्त कौमुदी आदि आज व्याकरण ज्ञान के लिए उपलब्ध होते है।

यह 'नाद' की एवं उससे उत्पन्न भाषा–साहित्य के विकास की इतिवृत्तिता है। नाद–अक्षर या वर्ण की व्याकरणिक व्याख्या है तथापि संस्कृत वांङगमय में इस 'नाद–अक्षर या वर्ण' के अन्य चमत्कारिक शक्ति का संधान भी प्राप्त होता है। यथा–वर्ण या नाद को 'अक्षर ब्रह्म' भी कहा गया, जो नित्य है। यह कभी क्षय न होने वाला 'ब्रह्म' है। नि"चय ही देव प्रदत्त शक्तियाँ अनित्य नहीं हो सकती–भारतीय द"ान 'ब्रह्म के नित्यत्व' को स्थापित करता हुआ ही दीख पड़ती है। 'ब्रह्म नित्यं जगन्मिथ्या'।

भारतीय इतिहास के महाभारत काल से बौद्धधर्म के प्रारम्भ होने के पहले तक अर्थात् दो हजार वर्षों संस्कृत वाङ्मय क वैज्ञानिक ग्वेषणा का काल था। खासकर ''अक्षर–ब्रह्म'' की चमत्कारी शक्तियों की ग्वेषणा का, परिणामतः–ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, रूद्रयामल, आदियामल स्कंदयामल, कूर्मयामल, देवीयामल आदि यामल शास्त्र एवं युद्धजयार्णव कौमारी, कौ"ाल, योगिनीजाल, रक्षोहन, त्रिमुंड, स्वरार्णव, भूवल भैरव, स्वर भैरव, पटल आदि स्वर"ाास्त्रादि ग्रन्थों का प्रस्फुटन हुआ।

नरपति जयचर्चा स्वरोदय में कहा गया है –

''श्रुत्वादौ यामलान्सप्त तथा युद्धजयार्णवम्।
कौमारीं कौ"ालं चैव योगिनीजालसंचरम्।।
रक्षोध्नं च त्रिमुण्डं च स्वरसिंहं स्वरार्णवम्।
भूवलं भैरवं नाम पटलं स्वरभैरवम्।।
तन्त्रं रणाह्वयं ख्यातं सिद्धान्तं जयपद्धतिम।
पुस्तकेन्द्रं च ढौकं च श्री द"ाज्योतिषं तथा।।
मन्त्रयन्त्राण्येकानि कूटयुद्धानि यानि च।
तन्त्रयुक्तिं च विज्ञानं विज्ञानं वऽवानले।।
एतेषां सर्व"ाास्त्राणां दृष्टसारोऽहभात्माना।
रोद्धारं भणिष्यामि सर्वसत्त्वानुकम्पया।।''
("लोक 3–7 पृ0–2)

इस प्रकार नरपति जयचर्चा स्वरोदय नामक ग्रन्थ में लेखक ने उपरोक्त ग्रन्थों का अध्ययन कर राजा के 'युद्ध विजय' के निमित्त 'अक्षर ब्रह्म' को शस्त्र के रूप में प्रयोग करने की कला की व्याख्या की है। जो नाद–ब्रह्म, अक्षर–ब्रह्म के चरम एवं वैज्ञानिक शक्ति प्रयोग की पराकाष्ठा है। इसे 'मंत्र–शक्ति' भी कहा गया है।

मन्त्रों का आश्रय वर्ण या नाद है, वर्ण माहेश्वर द्वारा प्रदत्त 'अक्षर समाम्नाय' ही है जिसे देवनागरी भाषा की वर्णमाला के नाम से भी जाना जाता है। जिसे 'अल्–सूत्र' कहा गया है अर्थात् अ से ल एवं क्ष त्र ज्ञ कुल 51 वर्ण हैं जो मंत्रों के बीज कहे गये हैं।

आद्या"ाक्ति के विभिन्न विग्रहों यथा काली के गले की 51 मुण्डों की माला, वाग्देवी सरस्वती के हाथों की 51 स्फटिक की माला, "ाव के रूद्राक्ष की माला सभी समाम्नाय के 51 वर्णों का बोध कराते हैं। सभी वर्ण माला के प्रतीक है, जो सत–रज–तम प्रकृति के पुट से कभी तामसिक स्वरूप–नरमुण्ड माला के रूप में, रजगुणों युक्त अक्षमाला के रूप में, सत्वगुणों युक्त स्फटिक माला के रूप में चित्रित हुए है वस्तुतः ये वर्ण–माला के प्रतीक है।

मंत्र–जप, जो चेतना का मन्थन करनेवाली प्रक्रिया है। आत्मा की निचली ओर, कि प्रणव की उपरी ओर अरणि बनकर, मन्थन की प्रक्रिया के माध्यम से प्रकट होने वाले अग्नि की भांति ही ईश्वर के दर्शन होते हैं। मन्त्र बीज–विकार है जो एकाग्र अभ्यास द्वारा ''नाद'' के रूप में प्रकट होता है। वर्णों में विभिन्न शक्तियों का समावे"ा होता है और कई शब्दों के मेल से एक वि"िाष्ट शक्ति की दमक मिलती है। इन संघबन्ध शब्दों को मंत्र कहते हैं।

प्रत्येक मंत्र का अपना एक वि"िाष्ट देवता अथवा अधिष्ठात्री शक्ति होती है, जिसको बारम्बार जप रूप ताप से प्रबुद्ध किया जाता है। जिस देवता का वह मंत्र होता है, पहले उसका भाव जाग्रत में लाकर स्थूल रूप देना पड़ता है। वर्णों में स्थित मातृका शक्ति की आत्मयाग के प्रसंग में साधक स्व"ारीर या मानव देह में उनकी स्थिति एवं न्यास करता है। योगिनी हृदय तन्त्र में कहा गया है–

''पीठानि विन्यसेद देविमातृका स्थानके प्रिये।
एते पीठः समुदिष्टा मातृका रूपका स्थिता।।''

इसी प्रकार शाक्त में तो शक्ति पीठों के प्रसंग में भी 51 पीठों का वर्ण सम्मनाय एवं शरीरस्थ स्थिति का वर्णन उपलब्ध होता है। अर्थात् शक्ति पीठों का आश्रय वर्णों में एवं मानव शरीर के अंगों में स्थित दिखाया गया है– यथा

अं कामरूपाय नमः "ारसि।
आं वाराण्स्यै नमः गुरव वृत्त।
थं उज्जयनिन्यै नमः वाम जनुनि।
नं हिस्तनापुराय नमः वाम पादांगुल्याग। आदि।
(देवी पुराण)

वर्णों के वैज्ञानिक एवं दा"ार्निक चिन्तन व व्याख्या के लिए एक 'कुलाकुल चक्र' है जिसे समझना आव"यक है –

वर्णों का – कुलाकुल चक्र

बाल	कुमार	युवा	वृद्ध	मृत	
अ, आ, ए	इ, ई, ऐ	ड, ऊ, ओ	ऋ, ॠ, औ	लृ, ॡ, अं	स्वरवर्ण
क	ख	ग	घ	ङ	व्यंजन
च	छ	ज	झ	ञ	वर्ण
ट	ठ	ड	ढ़	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	श्र	ल	ं	श	
ष	क्ष	लृ	स	ह	
तालु	दन्त	ओष्ठ	जीभ	कण्ठ	उच्चारण स्थान
धरा	जल	अग्नि	वायु	आकाश	पंचभूत
गंध	रस	रूप	स्प"ा	शब्द	विषय
पिण्ड	पद	रूप	रूपतीत	निरंजन	संज्ञा
निवृति	प्रतिष्ठा	विद्या	शन्ति	अतिशन्ति	कला
चतुरस्त्र	अर्थचन्द्र	त्रिकोण	'ाट्कोण	वर्तुल	चक्र
ब्रह्म	विष्णु	रूद्र	सूर्य	चन्द्र	देवता

इसी प्रकार–मानव शरीर रूपी ब्राह्मण्ड के तीन भाग है –

1. स्वब्रह्माण्ड–"ारीर का मध्य भाग–तत्त्व–'विराट' एवं शक्तियां–कारण है।
2. परा ब्राह्माण्ड–"ारीर के उपर का भाग – तत्त्व–'विद्युत' एवं शक्तियाँ–सूक्ष्म है।
3. अपरा ब्राह्माण्ड–"ारीर के नीचे का भाग–तत्त्व–"ान्य' एवं शक्तियाँ–स्थूल है।

यद्यपि 'एकाक्षरी कोष' में ऐसा कोई अक्षर नहीं है, तो मंत्र न हो तथापि उदाहरणार्थ आका"ा का ''हं'', वायु का ''यं'', अग्नि का ''रं'', जल तथा अमृत का ''वं'', पृथ्वी का–''लं'', प्रणव का–''ऊँ'', गणे"ा का ''गं'', सरस्वती का ''ऐं'', काली का ''क्रीं'' महालक्ष्मी का ''श्रीं'' आदि 'बीज मंत्र' कहे गये है। इस 'बीज मंत्र' के अतिरिक्त नमः, स्वाहा, वषट, वौषट, हुम, फट् आदि शब्द का प्रयोग मंत्रों के साथ देखे जाते हैं। इन शब्दों के भी अपने वि"िाष्ट अर्थ हैं।

मंत्र साधारण शब्दार्थ नहीं है, इसकी शक्ति तथापि इसका एक अर्थ तो होता ही है। मंत्र इष्ट देवता से अभिन्न होने पर भी देवता के रूप का बोध कराता है,

इसलिए इष्टदेव का अनुग्रह वि"ोष ही मन्त्र है। मंत्र जिस वस्तु का संकेत करता है, साधक को जहाँ ले जाना चाहता है, यदि साधक को भी उस लक्ष्य का पता हो, तो यात्रा में, साधना में सहायक होगी। एतदर्थ शास्त्रों में मन्त्र–जप के साथ उसके अर्थ ज्ञान की आव"यकता बतलायी गयी है।

योग द"ार्न में तो 'मन्त्रार्थभावना' को ही जप कहा गया है। 'मन्त्र' का धातुगत अर्थ है–'गुप्त परिभाषा' परन्तु साधक के लिए यह गुप्त नहीं प्रकट होना चाहिए। भगवान शंकर ने कहा है –

''ध्यानेन परमे"ाानि यदपं समुपस्थितम्।
तदेव परमे"ाानि मन्त्रर्थ विद्धि पार्वति।''

(कल्याण साधना अंक–228–224)

अर्थात्–जब साधक इतना तन्मय हो जायेगा, कि वह स्वयं मन्त्रदेवतात्मक ब्रह्म से पृथक नहीं रह जाएगा, तब कहीं इसी स्थिति के फलस्वरूप मन्त्र का वास्तविक अर्थ अर्थात् लक्ष्यार्थ प्रकट होगा, वास्तव में यही मन्त्रार्थ है।

मंत्रोंपासना को 'जप' कहा गया है। जप को अन्य यज्ञो की अपेक्षा श्रेष्ठ बताया गया है। जप–यज्ञ में किसी भी बाह्य सामग्री अथवा हिंसा आदि की आव"यकता नहीं होती। ज पके प्रसंग में 'गौतमी जाप' में कहा गया कि –

''केवल वर्णो के रूप में जो मन्त्र की स्थिति है,
वह जो जड़ता या प"ाुता है।
सुषुम्णा के द्वारा उच्चारित होने पर
उसमें शक्ति संचार होता है।''

कुलार्णवतन्त्र में भगवान शंकर ने कहा है कि–''मन एक जगह, ि"ाव दूसरी जगह, शक्ति, तीसरी जगह है और प्राण चौथी जगह–ऐसी स्थिति में मन्त्र सिद्धि कहाँ सम्भव है, अतः इन सबका एकत्र चिन्तन ही वास्तविक जप है।''

''मन्त्र मात्राओं का रहस्य'' म कहा गया–

अवर्गे तु महालक्ष्मीः क वर्गे कमलोद्भवा।
चवर्गे तु महे"ाानी हवर्गे कुमारिका।।
नारायणी तवर्गे तु वाराही तु पवर्गिका।
एता सप्तमहामातृः सप्तलोकव्या च स्थिता।

जिसका शब्दार्थ, भावार्थ, लक्ष्यार्थ नि"चय ही शोधर्थ है। इस प्रकार महादेव महे"वर प्रदत्त ''वर्ण समाम्नाय'' 'अक्षर ब्रह्म' 'नाद', 'मंत्र' समानार्थी एवं चमत्कारि फल प्रदातृ हैं साथ ही पूर्ण ब्रह्म का द्योतक है। जो मानव जीवन के विभिन्न ज्ञान–विज्ञान की गर्भा है।

सन्दर्भ

1. लघु सिद्धान्त कौमुदी–श्रीधरानन्द शास्त्री–मोतीलाल वनारसी दास
2. कारकदीपिका–डॉ0 वाने"वर पाठक–सुबोध ग्रन्थमाला, रांची।
3. सिद्धान्त कौमुदी–प्रो0 उमा"ांकर शर्मा ऋषि–चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
4. लघु सिद्धान्त कौमुदीतत्व प्रका"ा–पं. श्रीरामगोविन्द शुक्ल–मोतीलाल वनारसी दास
5. सिद्धान्त कौनुदी–डॉ0 आद्याप्रसाद मिश्र–अक्षवट प्रका"ान, इलाहाबाद
6. नरपतिजयचर्मास्वरोदयः–पं0 गणे"ादत्त पाठक–चौखम्बा संस्कृत संस्थान
7. कल्याण साधना अंक–गीताप्रेस गोरखपुर
8. योगिनी हृदयतन्त्र–रूद्रदेव त्रिपाठी–रंजन पब्लिके"ान, दिल्ली
9. एकाक्षरी कोष–चौखम्बा प्रकाशन
10. कुलार्णव तन्त्र–ऋत"ाील शर्मा–कल्याण मंदिर प्रका"ान प्रयाग
11. मन्त्र मात्राओं का रहस्य–वि"वमोदिनी पाण्डेय–डी0 के0 प्रिंटवर्ल प्रा0 लि0